इकाई 4 अग्नि पुराण का सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 अग्नि पुराण का सामान्य परिचय

- 4.2.1 अग्नि पुराण का सामान्य परिचय
- 4.2.2 अग्नि पुराण में वर्णित विभिन्न विषय
- 4.2.3 अग्नि पुराण का फल

4.3 अग्नि पुराण का वैशिष्ट्य

4.4 सारांश

4.5 सन्दर्भग्रन्थ सूची

4.6 बोध प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस इकाई अध्ययन से आप :

- अग्नि पुराण को जान सकेंगे।
- अग्नि पुराण की विषयवस्तु को जान पायेंगे।
- अग्नि पुराण के वैशिष्ट्य को जान पायेंगे।
- अग्नि पुराण में आए सिद्धान्तों को समझेंगे।
- अग्नि पुराण को विश्वकोश क्यों कहा जाता है जान पायेंगे।

4.1 प्रस्तावना

चारों वेद वाङ्मय प्रभुसम्मित हैं तथा समस्त पुराण वाङ्मय सुहृत्सम्मित है[1]। पुराणों में वेद की प्रतिष्ठा अर्थात् भारत की ज्ञान परम्परा निहित है। नारद पुराण में पुराण को सभी वेदों के अर्थ का सार कहा गया है - **"सर्ववेदार्थसाराणि पुराणानि भूपते"**[2]। पुराण आर्य जाति का सर्वस्व है। पुराणों में मानव जाति की अनादि काल से चली आ रही परम्परा को बताया गया है। भारतीय साहित्य कला का जितना आविर्भाव हुआ उस सबका आधार स्तम्भ पुराण ही है। स्कन्द पुराण में कहा गया है जो पुराण को नहीं जानता, वह वेद को भी नहीं जान पाता। धार्मिक परम्परा में वेद के बाद पुराण की ही मान्यता है। सभी पुराणों का भिन्न-भिन्न विषय है। इन पुराणों में नाना प्रकार की विद्याओं को, नाना प्रकार के वंशों को, नाना प्रकार के तीर्थों को, नाना प्रकार के व्रतों को तथा नाना प्रकार की सामग्री को सरल तथा बोधगम्य तरीके से बताया गया है। पुराणों में

[1] काव्यप्रकाश: मम्मट विश्वेश्वर पाण्डेय व्याख्याकृत (प्रथम उल्लास, पृ. सं. १०);

[2] नारद पुराण (१.९.१००);

सगुण ब्रह्म की उपासना को बताया गया है तथा आध्यात्मिक चिन्तन पर जोर दिया गया है। पुराण के पञ्च लक्षण में सृष्टि तत्त्व का वर्णन प्रमुख है और इसी सृष्टि वर्णन के विकास के लिए प्रतिसर्ग, मन्वन्तर, वंश और वंशानुचरित का समावेश किया गया है। इन सभी पुराणों का विषय सभी मानवों को लौकिक चिन्तन की नई दिशा प्रदान करता है। इनमें इन अठारह पुराणों में विश्वकोष के नाम से व्यवहार किए जाने वाला अग्निपुराण है। इस अग्नि पुराण में अग्नि के माहात्म्य को बताया गया है। यह पुराण सर्ग आदि पाँच लक्षणों तक सीमित न रहकर अनेक शास्त्रों तथा आचार्यों के मतों को उपस्थापित करता है। अठारह पुराणों में इसको आठवाँ पुराण माना गया है। अग्नि पुराण में धर्मशास्त्रीय आचारों, व्रतों, दान, श्राद्ध, तीर्थ माहात्म्य आदि का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। इस पुराण की भाषा सरल और सुबोध है जो अच्छे प्रकार से समझ आ जाती है। इस पुराण में विष्णु के अवतारों के विषयों में भी बताया गया है। इसमें कृष्ण की महिमा को प्रदर्शित करने वाले महाभारत की कथा वर्णित है। इस पुराण सृष्टि अर्थात् जगत को विष्णु की क्रीड़ा बताया गया है। इस पुराण के अंतिम अध्याय में इसके माहात्म्य के साथ परा और अपरा विद्या को बताया गया है।

4.2 अग्नि पुराण का सामान्य परिचय

4.2.1 अग्नि पुराण सामान्य परिचय

अठारह पुराणों में इस पुराण का आठवाँ स्थान है। अग्नि पुराण में ३८३ अध्याय है तथा भागवत पुराण के अनुसार इसमें १५४०० श्लोक हैं। पद्म पुराण के अनुसार अग्नि पुराण तामस पुराण है। इस पुराण में अग्नि तथा शिव का माहात्म्य वर्णित है। इस पुराण का उपदेश अग्नि ने वसिष्ठ को दिया था[3], परन्तु अग्नि पुराण के अनुसार इस पुराण के कर्ता और श्रोता स्वयं जनार्दन को बताया गया है –

'आग्नेयाख्य पुराणस्य कर्ता श्रोता जनार्दनः।
तस्मात् पुराणमाग्नेयं सर्ववेदमयं महत्'॥

इस पुराण की भाषा सरल और अच्छी प्रकार से समझ में आने वाली है। इसमें गद्य भी प्राप्त होता है। अत्यन्त लघु आकार होने पर भी इस पुराण में सभी विद्याओं का समावेश किया गया है। इस दृष्टि से अन्य पुराणों की अपेक्षा यह और भी विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण हो जाता है। पुराणों के पाँचों लक्षणों- सर्ग, प्रतिसर्ग, राजवंश, मन्वंतर और वंशानुचरित आदि का वर्णन भी इस पुराण में प्राप्त होता है। अग्नि पुराण ज्ञान का विशाल भण्डार है। अग्नि पुराण में सभी विद्याओं का वर्णन है। गीता, रामायण, महाभारत, हरिवंश पुराण आदि का परिचय इस पुराण में है। अग्नि पुराण का आरम्भ अग्नि एवं वशिष्ठ के संवाद से होता है। इसके पहले अध्याय में अग्नि पुराण का महत्त्व तथा परा अपरा विद्या का विशद वर्णन है। मत्स्य, कूर्म आदि अवतारों की कथाएं भी इसमें दी गई हैं। सृष्टि-वर्णन, सन्ध्या, स्नान, पूजा विधि, होम विधि, मुद्राओं के लक्षण, दीक्षा और अभिषेक विधि, निर्वाण-दीक्षा के संस्कार, देवालय निर्माण कला, शिलान्यास विधि, देव प्रतिमाओं के लक्षण, लिंग लक्षण तथा विग्रह प्राण-प्रतिष्ठा की विधि, वास्तु पूजा विधि, तत्त्व दीक्षा, खगोल शास्त्र, तीर्थ माहात्म्य, श्राद्ध कल्प, ज्योतिष शास्त्र, संग्राम विजय, वशीकरण विद्या, औषधि ज्ञान, वर्णाश्रम धर्म, मास व्रत, दान माहात्म्य राजधर्म, विविध स्वप्न वर्णन, शकुन-अपशकुन, रत्न परीक्षा, धनुर्वेद शिक्षा, व्यवहार कुशलता, उत्पात शान्ति विधि, अश्व

[3] मत्स्य पुराण (५३.२८);

चिकित्सा, सिद्धि मन्त्र, विविध काव्य लक्षण, व्याकरण और रस-अलंकार आदि के लक्षण, योग, ब्रह्मज्ञान, स्वर्ग-नरक वर्णन, अर्थ शास्त्र, न्याय, मीमांसा, सूर्य वंश तथा सोम वंश आदि का वर्णन इस पुराण में किया गया है। इस पुराण में कहा गया है कि देवपूजा में समानता का भाव रखना चाहिए। अपराध का प्रायश्चित सच्चे मन से करना चाहिए। इसमें स्त्री के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया गया है –

'नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पंचत्स्वापस्तु नारीणां पतिरन्यों विधीयते'॥

अर्थात् इसके अनुसार पति के नष्ट हो जाने, मर जाने, सन्यास ग्रहण कर लेने, नपुंसक या पतित होने पर स्त्री को दूसरा पति कर लेना चाहिए।

अग्नि पुराण में भूगोल सम्बन्धी ज्ञान, व्रत-उपवास, तीर्थों का ज्ञान, दान-दक्षिणा आदि का महत्त्व बताते हुए वास्तुशास्त्र और ज्योतिष आदि का भी वर्णन किया गया है। इस पुराण में व्रतों का काफी विस्तृत वर्णन है। इसमें बताया गया है कि व्रत-उपवास के समय जीवन में बहुत सादगी और धार्मिक अचार-विचार का पालन करने पर भी बल दिया गया है। अग्नि पुराण ज्ञान मार्ग को ही सत्य स्वीकार करता है। उसका कहना है कि ज्ञान से ही ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है, कर्मकाण्ड से नहीं। ब्रह्म की परम ज्योति है जो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से भिन्न है। वह ब्रह्म जरा, मरण, शोक, मोह, भूख-प्यास तथा स्वप्न-सुषुप्ति आदि से रहित है। इसके अध्याय ३८१ में श्रीमद्भगवद्गीता का सार बताया गया है तथा अध्याय ३८२ में यमगीता बताई गई है। इसके अन्तिम अध्याय में अग्निपुराण का माहात्म्य बताया गया है।

4.2.2 अग्नि पुराण में वर्णित विभिन्न विषय

अग्नि पुराण में काव्यशास्त्र – इस पुराण के ग्यारह अध्यायों (३३७-३४७) में काव्यशास्त्र का विस्तृत वर्णन है। बहुत सी नाट्यशास्त्र की कारिकाएँ इसमें प्राप्त होती हैं। अग्निपुराण में काव्य के तीन भेद बताए गए हैं – गद्य, पद्य और मिश्र।

अग्नि पुराण में व्याकरणशास्त्र – इसके अध्याय ३४८ से लेकर ३५९ तक व्याकरण का विशद वर्णन किया गया है। तथा इसके पश्चात् शब्दकोश का भी गाम्भीर युक्त वर्णन प्राप्त होता है।

अग्नि पुराण में कालगणना - अर्थात् समय की माप का निर्देश और महत्व विस्तार से बताया गया है साथ ही गणित के स्वरूप और उसके महत्व की भी व्याख्या की गई है। व्रतों की सूची तिथि, वार, मास, ऋतु आदि के अनुसार अलग-अलग बनायी गयी है

अग्नि पुराण में वास्तुकला - भवन निर्माण, देवालय (मंदिर) निर्माण, मूर्ति निर्माण और प्रतिष्ठा का विधान पूरे विस्तार से वर्णित है। भूगोल, ज्योतिष तथा वैद्यकीय विद्या का भी विस्तृत वर्णन अग्नि पुराण में उपलब्ध है। चौसठ योगिनियों की उत्पत्ति, प्रकृति की संरचना आदि का भी विस्तार से वर्णन है। किलों का निर्माण किस प्रकार करना चाहिए? यह अध्याय २२२ में बताया गया है। इसके अध्याय ४१-४५ तक शिला विन्यास की विधी बताई गई है।

अग्नि पुराण में राजनीति - राज्य पद पर किस का अभिषेक कैसे होना चाहिए? सचिवों और सलाहकारों की नियुक्ति, मंत्रियों की नियुक्ति, वित्त विभाग के लिए दिशा निर्देश, प्रशासनिक व्यवस्थाओं के लिए निर्देश, सीमा सुरक्षा, सैन्य प्रशिक्षण, शस्त्रों का ज्ञान और प्रशिक्षण,

राजधर्म आदि विषयों का बहुत ही विस्तार से अग्नि पुराण में वर्णन है। राजधर्म के विषय में यह ग्रंथ कहता है कि राजा को अपनी प्रजा का पालन उसी प्रकार करना चाहिए, जैसे कोई पिता अपने बच्चों का करता है।

अग्नि पुराण में आयुर्वेद - अग्नि पुराण के उत्तर भाग के अधिकांश अध्यायों में आयुर्वेद से जुड़े भिन्न-भिन्न प्रकार के दुर्लभ ज्ञान भरे हुए हैं साथ ही वेदांग का भी वर्णन उत्तर भाग में किया गया है। इस पुराण को भारतीय जीवन का विश्वकोश कहा जा सकता है। इसमें शरीर और आत्मा के स्वरूप को अलग-अलग समझाया गया है. इन्द्रियों को यंत्र माना गया है। देह के अंगों को आत्मा नहीं माना गया है। अग्नि पुराण में चिकित्साशास्त्र की व्याख्या की गयी है, जिसके अनुसार सारे रोग अत्यधिक भोजन करने से होते हैं या बिल्कुल भोजन न करने से। इसलिए हमेशा संतुलित भोजन करना चाहिए। इसमें जड़ी-बूटियों द्वारा रोगों की उपचार विधियाँ भी बतलाई गयी हैं।

अग्नि पुराण में लौकिक व्यवहार – इस पुराण में बहुत से आख्यान और उपख्यानों के माध्यम से तथा संवाद के माध्यम से लोक व्यवहार को दर्शाया गया है। इस पुराण में बहुत से सुभाषित और लोकोक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। अग्नि पुराण में स्वप्न विचार और अध्याय २३०-२३२ में शकुन-अपशकुन पर भी विचार किया गया है. पुरुष और स्त्री के लक्षणों की चर्चा भी इस पुराण का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। सर्पों के बारे में भी इसमें विस्तृत जानकारी है। इसमें मंत्र-शक्ति पर विस्तार से लिखा गया है। इसके अध्याय २५६ में सम्पत्तियों का विभाजन भी बताया गया है तथा अध्याय २२९ में स्वप्नों का महत्त्व बताया गया है।

अग्नि पुराण में दर्शन - अग्नि पुराण में ज्ञानमार्ग को ही सत्य माना गया है। इसके अनुसार ज्ञान से ही ब्रह्म की प्राप्ति संभव है, कर्मकाण्ड से नहीं। ब्रह्म ही परम ज्योति है, जो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से अलग है। यह वृद्धावस्था, मौत, शोक, मोह, भूख-प्यास और स्वप्न-सुषुप्ति आदि से रहित है। अग्नि पुराण में मन की गति को ब्रह्म में लीन होना ही योग कहा गया है। जीवन का अंतिम लक्ष्य आत्मा और परमात्मा का संयोग ही होना चाहिए।

अग्नि पुराण में वर्णाश्रम व्यवस्था - वर्णाश्रम धर्म की भी इस पुराण में बहुत सुंदर व्याख्या की गयी है। ब्रह्मचारी को हिन्सा, निंदा से दूर रहना चाहिए। गृहस्थाश्रम के सहारे ही अन्य तीन आश्रमों का जीवन-निर्वाह होता है। इसलिए गृहस्थ को सभी आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। इसमें वर्ण के आधार पर किसीके साथ भेदभाव न करने की सीख दी गयी है। इसके अनुसार, वर्ण कर्म से बने हैं, जन्म से नहीं।

अग्नि पुराण में पर्यावरण – अग्नि पुराण के अध्याय ७० में वृक्ष लगाने की विधी बताई गई है। तालाब और सरोवर की स्थापना तथा उनके पूजन के विषय में अध्याय ६४ में बताया गया है। इस पुराण में नदियों की महिमा भी बताई गई है। इसके अध्याय १५८ में प्रदूषण के प्रकार बताए गए हैं।

अग्नि पुराण में भौगोलिक सामग्री – इस पुराण के १०८वें अध्याय में ब्रह्माण्ड सम्बन्धी विवरण (भुवनकोष वर्णन) प्राप्त होता है। अध्याय ११८ में भारतवर्ष का मनोहर विवरण दिया गया है। अध्याय ११९ में महाद्वीपों का विवरण प्राप्त होता है तथा अध्याय १२० में ब्रह्माण्ड की सीमा के विषय में बताया गया है। प्रयाग माहात्म्य, वाराणसी माहात्म्य, गया माहात्म्य भी इस पुराण में बताए गए हैं।

अग्निपुराण में खगोल और ज्योतिष विज्ञान – इसके अध्याय १२१ में खगोल और ज्योतिष का विशद वर्णन किया गया है। एवं १२२वें अध्याय में पचाङ्ग के विषय में बताया गया है। तथा अन्य अध्यायों जैसे १२३-१३२ तक ज्योतिष का वर्णन प्राप्त होता है।

अग्नि पुराण में धर्मशास्त्र – इसके अध्याय १६२ में कानून संहिता का वर्णन प्राप्त होता है तथा अध्याय १६५ में आचार संहिता (नाना-धर्म) प्राप्त होती है तथा अध्याय २२६ और २२७ में भी आपराधिक संहिता का वर्णन है। और भी बहुत से अध्याय हैं जिनमें धर्मशास्त्रीय और कानूनी विषय प्राप्त होते हैं।

अग्नि पुराण में शस्त्रविज्ञान – इस पुराण के अध्याय २२८ में सैन्य अभियान से सम्बन्धित निर्देश प्राप्त होते हैं। इसके अध्याय २४९ से लेकर २५२ तक शस्त्रविज्ञान का वर्णन है। इसमें राजा के सैन्य अभियान से सम्बन्धित निर्देश भी प्राप्त होते हैं।

अग्नि पुराण में ऐतहासिक सामग्री – इस पुराण के अध्याय २७३ में सूर्यवंश वर्णन, २७४ में चन्द्रवंश वर्णन, २७५ में यदुवंश वर्णन, २७७ में अङ्ग राजवंश वर्णन तथा २७८ में पुरु आदि राजओं के वंश का वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण की अपनी स्वतन्त्र ऐतिहासिक महत्ता है जो इसको अन्य पुराणों से भिन्न बनाती है। इस पुराण के अध्याय २४६ में रत्न परीक्षा की प्राचीन विधि बताई गई है।

अग्नि पुराण में पशु चिकित्सा – इस पुराण में पशु चिकित्सा का भी वर्णन प्राप्त होता है। इसके अध्याय २८७ में गज चिकित्सा, अध्याय २८९ में अश्व चिकित्सा, अध्याय २९२ में गौ चकित्सा का वर्णन है। तथा पशुशालाओं के विषय में भी इस पुराण में विस्तार से बताया गया है।

4.2.3 अग्नि पुराण का फल

अग्नि पुराण को साक्षात् अग्नि देवता ने अपने मुख से कहा है। इस पुराण के श्रवण करने से मनुष्य अनेकों विद्याओं का स्वामी बन जाता है। जो ब्रह्मस्वरूप अग्नि पुराण का श्रवण करते हैं, उन्हें भूत-प्रेत, पिशाच आदि का भय नहीं सताता। इस पुराण के श्रवण करने से ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता, क्षत्रिय राजसत्ता का स्वामी, वैश्य धन का स्वामी, शूद्र निरोगी हो जाता है तथा उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इतना ही नहीं जिस घर में अग्नि पुराण की पुस्तक भी हो, वहाँ विघ्न बाधा, अनर्थ, अपशकुन, चोरी आदि का बिल्कुल भी भय नहीं रहता। इसलिये अग्नि पुराण की कथा का श्रवण अवश्य करना चाहिये। इस पुराण के सुनने से देवगण ही नहीं अपितु समस्त प्राणी जगत् सुख प्राप्त करता है। इस पुराण को सुनने और पढने से मनुष्य स्वयं ज्ञानवान् हो जाता है क्यों कि इस पुराण में इतने विषयों की प्रचुरता है जिनको जानकर वह स्वयं में गौरवान्वित महसूस करेगा।

4.3 अग्नि पुराण का वैशिष्ट्य

पुराण साहित्य भारतीय जीवन और साहित्य की अक्षुण्ण निधि है। इसमें मानव जीवन के उत्कर्ष और अपकर्ष की अनेक गाथाएँ मिलती हैं। अठारह पुराणों में अलग अलग देवी-देवताओं को केन्द्र में रखकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएं कहीं गई हैं। इस रूप में पुराणों का पठन और आधुनिक जीवन की सीमा में मूल्यों की स्थापना आज के मनुष्य को एक निश्चित दिशा दे सकता है। देखा जाए तो सभी पुराण गाम्भीर विषयों से भरे हुए है। लेकिन अग्नि पुराण एकमात्र ऐसा पुराण जिसको सभी विद्याओं की खान कहा जाए तो कोई

अतिशयोक्ति नहीं होगी। अग्नि पुराण के अनुसार, मनुष्य जन्म दुर्लभ है लेकिन मनुष्य जीवन में कवि होना बहुत सौभाग्य की बात है –

'नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा'।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा'॥

विश्वकोशात्मकता इस पुराण की सबसे बडी विशिष्टता है[4]। कपिल द्विवेदी अग्नि पुराण को महाभारत के समतुल्य ग्रन्थ बताते हैं[5]। इस पुराण के ६ अध्यायों में भगवान् राम के जन्म को बताया गया है। इस पुराण में सभी पुराणों की अपेक्षा व्रतों अत्यन्त विशद वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण की यह भी एक विशिष्टता है कि इसमें चारों वेदों के मन्त्रों का प्रयोग बताया गया है (क्रमशः अध्याय २५९-२६२ तक)। इस पुराण के २८२वें अध्याय में बागवानी का अद्भुत वर्णन है जो अन्य पुराणों से इसको विशिष्ट बनाता है। इसमें नरक वर्णन भी विशद रूप में किया गया है। योग दर्शन तथा वेदान्त दर्शन भी अन्तिम अध्यायों में अति सूक्ष्म तरीके से किया गया है। विश्व का ऐसा कोई विषय नहीं है जो इससे अछूत हो। 'जो इनमें नहीं मिलता, वह कही नहीं मिलता' यह बात महाभारत और नाट्यशास्त्र के विषय में कही जाती है, यही बात अगर अग्नि पुराण के विषय में कही जाए तो बिल्कुल भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस पुराण की सर्वाधिक विशिष्टता यह है कि यह अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है, जिसकी भाषा और रचना, बडे ही सरल तरीके से की गई है। अग्नि पुराण साहित्य में अपनी व्यापक दृष्टि तथा विशाल ज्ञान भंडार के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। अग्निपुराण पुराण साहित्य में अपनी व्यापक दृष्टि तथा विशाल ज्ञान भंडार के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। विषय की विविधता एवं लोकोपयोगिता की दृष्टि से इस पुराण का विशेष महत्त्व है।

4.4 सारांश

पुराण ज्ञान के बिना वेद ज्ञान अधूरा है। भारत की सनातन संस्कृति पुराण-साहित्य पर ही टिकी हुई है। जैसा कि पुराणों के विषय में वी.राघवन कहते हैं कि **"पुराण साहित्य, व्याकरण, ललित एवं उपयोगी कला, राजनीति, स्थापत्य, सैन्य विज्ञान, औषधि, माणिक्य आदि से सम्बन्धित भारतीय ज्ञान का विश्वकोष है"**[6]। पुराणों में वेद की अध्यात्म विद्या को संजोकर, आख्यान-उपाख्यानों के माध्यम से पिरोया गया है।

इस इकाई में हमने अग्नि पुराण के परिचय तथा वैशिष्ट्य को भलीभाँति जाना। अग्नि पुराण में नाना प्रकार के विषयों की प्रचुरता है। अग्नि देव ने इस पुराण को महर्षि वशिष्ठ को सुनाते हुए कहा था –

"आग्नेये हि पुराणेऽस्मिन् सर्वा विद्या प्रदर्शिता:"

अर्थात् अग्नि पुराण में सभी विद्याओं का वर्णन है। पद्म पुराण के अनुसार अग्नि पुराण को भगवान विष्णु का चरण कहा गया है। पुराण के आरंभिक अध्यायों में राम और कृष्ण सहित भगवान के विभिन्न अवतारों का वर्णन है। अन्य अध्यायों में धार्मिक अनुष्ठानों, विशेष रूप से भगवान शिव की पूजा से संबंधित अनुष्ठानों के बारे में वर्णन किया गया है। कई अध्यायों में पृथ्वी, तारों और नक्षत्रों के साथ-साथ राजाओं के कर्तव्यों का भी वर्णन है। इस पुराण में विष्णु

[4] संस्कृत साहित्य का इतिहास: उमाशंकर ऋषि (पृ. १८५);
[5] संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास: कपिल देव (पृ. ९५);
[6] संस्कृत लिट्रेचर; (पृष्ठ संख्या – ३५);

को कालाग्नि कहा गया है जो रूद्र रूप धारण कर सृष्टि का अंत करते हैं। विष्णु का सर्वोपरि होना आरम्भ में ही स्पष्ट कर दिया गया है, अग्नि स्वयं को भी विष्णुरूप कालाग्नि बताते हुये पुराण अवयव, अवतार आदि बताते हैं –

"विष्णु: कालाग्निरुद्रोऽहं विद्यासारं वदामि ते"।

इस पुराण का क्रम विषय प्रस्तुति आदि अत्यन्त सुनियोजित हैं। शैव श्रेणी का माना जाने वाला होने पर भी वासुदेव एवं विष्णु की महत्ता का ही मुख्यत: प्रतिपादन हुआ है। दूसरे अध्याय से ही अवतार कथा आरम्भ हो जाती है, जिसमें पहला मत्स्य रूप है, वही प्रथम अवतार है –

"मत्स्यावतारं वक्ष्येऽहं वसिष्ठ शृणु वै हरे:"।

इसमें कहा गया है –

"राजानो राजपुत्राश्च मुनयो देवता हरि:।
यदुक्तं यच्च नैवोक्तमवतारा हरेरिमे"।

अर्थात् राजा, राजपूत, मुनि एवं देवता; हरि के रूप हैं। जिनका नाम बताया एवं जिनका नहीं बताया, वे समस्त हरि के अवतार हैं। विष्णु के अवतारों को किसी संख्या सीमा में न बाँध कर विराट रूप देना इस पुराण की विशेषता है। विष्णु के पचपन नामों द्वारा समस्त भारत का भूगोल हरि के विविध रूपों द्वारा अभिव्याप्त कर दिया गया है जो कि इस पुराण की बहुत ही प्रौढ़ एवं परिपक्व सर्जना का द्योतक है, साथ ही शैव मत के साथ समन्वय की धारा भी प्रवाहमान है। यह एक बहुत ही सशक्त पुराण है जिसने वर्तमान हिन्दू मनीषा को गढ़ने में महत् योगदान दिया है। अग्नि पुराण अग्नि देवता का वर्णन करता है।

4.5 सन्दर्भग्रन्थ सूची

१. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, भाग – त्रयोदश, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ – २०००।
२. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास: कपिलदेव द्विवेदी।
३. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती आकादमी, वाराणसी – २०१९।
४. पुराणविमर्श:, बलदेव उपाध्याय।
५. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी.काणे।

4.6 बोध प्रश्न

१. अग्निपुराण पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।
२. अग्निपुराण का सामान्य परिचय दीजिए।
३. अग्निपुराण का वैशिष्ट्य अपने शब्दों में लिखिए।
४. अग्निपुराण कैसा पुराण है इसका विभाजन किस प्रकार हुआ है।
५. अग्निपुराण के महत्त्व को समझाइए।
६. अग्निपुराण की विषयवस्तु को संक्षेप में लिखिए।